Bihar Board Class 7 Social Science History Notes Chapter 3 तुर्क-अफगान शासन

तुर्क-अफगान शासन

पाठ का सार संक्षेप

ग्यारहवीं सदी के लगभग मध्य में तोमरों ने दिल्ली शहर का विकास किया । दिल्ली व्यापार का केन्द्र था और यहाँ धनी-मानी व्यापारी रहते थे। उस समय यहाँ 'दिल्लीवाला' नाम सिक्का ढाला जाता था । 12वीं सदी के मध्य में अजमेर के शासक चौहानों ने दिल्ली पर अधिकार कर उसे अपने राज्य में मिला लिया । उन्होंने दिल्ली को भी प्रशासनिक केन्द्र बनाया । गोया कि चौहानों की दो राजधानियाँ थीं : अजमेर और दिल्ली। ..

1206 में मुहम्मद गौरी की मृत्यु हो गई । तब उसके प्रमुख अधिकारियों ने उसके राज्य को आपस में बाँट लिये। सम्पूर्ण भारतीय क्षेत्र कतबुद्दीन के हिस्से में आया । तब से दिल्ली के शासकों को गुलाम वंश का शासक कहा जाने लगा जो बलबन (1266 से 1287) तक जारी रहा । इल्तुतमिश ने 1210 के बाद मध्य एशिया से सम्बंध विच्छेद कर उत्तरी भारत को एक स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया । तुर्की के खलिफा ने उसे सुल्तान की उपाधि दी ।

तब से दिल्ली के शासक सुल्तान कहलाने लगे और राज्य को दिल्ली सल्तनत कहा जाने लगा । इन सुल्तानों को गुलाम वंश भी कहा जाता था क्योंकि पहला शासक कुतुबुद्दीन ऐबक गौरी का गुलाम ही था | 1287 में बलबन की मृत्यु के बाद 'कैकुवा' दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना ।

1320 में खिलजी वंश को हराकर तुगलक वंश की स्थापना हुई । इसका एक प्रसिद्ध शासक मुहम्मद बिन तुगलक ने करार को रद्द कर पुनः युद्ध में परास्त कर उन राज्यों को सीधे अपने अधीन कर लिया । तुगलक ने पश्चिम में भी अपनी सीमा का विस्तार किया । उसने मंगोल आक्रमणकारियों को भी करारी शिकस्त दी। मुहम्मद बिन तुगलक के बाद फिरोजशाह तुगलक सुल्तान बना जो 1388 तक रहा । तुगलक वंश के बाद 1526 तक दिल्ली और आगरा पर सैयद और लोदी वंशों का शासन रहा ।

केन्द्रीय शासन चुस्त और दुरुस्त था । हर विभाग को बाँटकर अलग-अलग अधिकारी नियुक्त किये गये । इलाकाओं को 'अक्ता' कहा जाता था, जिसके प्रभारी 'मुक्ती' कहलाते थे । अपने इलाका में कानून-व्यवस्था बनाये रखना इनका मुख्य काम था । इन्हें वेतन के बदले राजस्व वसूली का एक भाग दिया जाता था ।

आक्ता' के प्रभारी वंशगत नहीं होकर इनका तबादला भी होता था । 'अक्ता' सूबे का एक रूप था । ग्रामीण प्रशासन ग्रामीणों के अधीन था। इसके प्रधान चौधरी कहलाते थे। बाद के ग्रामीण प्रशासन की इकाई 'परगना' का गठन किया गया । गाँव प्रशासन की छोटी इकाई थी।

किसानों को भूमिकर के अलावा गृहकर तथा पशुकर भी देने होते थे ।
कर वसूलने वाले गांव के बड़े किसान चौधरी के साथ-साथ राय, राणा,
रावत आदि होते थे । राज्य कार्य में मुहम्मद बिन तुगलक के समय से
ही नित्य नये प्रयोग हुआ करते थे । तुगलक द्वारा राजधानी परिवर्तन इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना है। 'दिल्ली से दौलताबाद' और 'दौलताबाद से दिल्ली' एक मुहावरा बन गया ।

https://www.evidyarthi.in/

तुगलक की एक दूसरी गलती थी 'खुरासान विजय' की लालसा । इसके लिये इसने एक बड़ी सेना का गठन किया जिसमें लगभग चार लाख सैनिक थे । उधर खुरासान और मिस्र में मित्रता हो जाने के बाद 'खरासाम विजय' की लालसा धरी-की-धरी रह गई । इतनी बड़ी सेना को वेतन देना कठिन हो जाने पर सेना को भंग कर दिया गया । अब ये सैनिक लूटमार मचाने लगे। सुल्तान की हालत पतली हो गई । सैनिकों की यह करतूत जनता और सरकार दोनों के लिए सिरदर्द का सबब बन गया ।

फिरोजशाह तुगलक ने कृषि विकास के लिये अनेक नहरों का निर्माण कराया । इससे कुछ लाभ मिला । अब नहरों के किनारे कृषक अपना गाँव – बसाने लगे । उपज में वृद्धि हुई ।

सल्तनत काल में आबादी का एक बड़ा भाग किसानों का था । विभिन्न आकार की भूमि पर विभिन्न किसानों का अधिकार था । किसान खेती के औजार स्वयं रखते थे । साधारणतः किसान फस की झोपड़ियों में रहते थे । किसान मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल करते थे। जो किसान अधिक धन अर्जित कर लिये वे धनी लोगों के रहन-सहन के तौर-तरीके अपनाने लगे।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/